इक्कीसवीं शती के संस्कृत महाकाव्य : समकालीन समाज, धर्म और दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

संस्कृत विषय में पी.एच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध की

रूपरेखा

2013

निर्देशिका :

प्रो0 (श्रीमती) उर्मिला आनन्द
संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)

शोधार्थिनी :

आरती पुन्ढीर

अध्ययन का क्षेत्र : साहित्य
संस्कृत विभाग : कला संकाय
दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा

इक्कीसवीं शती के संस्कृत महाकाव्य : समकालीन समाज, धर्म और दर्शन के परिप्रेक्ष्य में

(शोध–कार्य का उद्देश्य)

महाकाव्य शब्द **'महत्'** और **'काव्य'** इन दो शब्दों से मिलकर बना है। इसमें जीवन के विस्तृत आयाम समाहित होते हैं। महाकाव्य मानव जीवन के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करने वाला एक ऐसा उत्कृष्ट प्रबन्ध काव्य माना गया है जिसमें किसी देश की संस्कृति समाज की समष्टि, समग्रता एवं मानवता सुरक्षित रहती है। संस्कृत महाकाव्यों में भारतीय संस्कृति के चारों स्तम्भों **'धर्मार्थकाममोक्षम्'** के माध्यम से आदर्श जीवन की प्रतिष्ठा की गई है। संस्कृत महाकाव्य का मुख्य आधार इतिहास और पुराण रहा है। इतिहास और पुराण दोनों में जीवन और जगत् को विराट फलक पर चित्रित किया गया है और दोनों का मूल रूप लेकर महाकाव्य स्वतन्त्र काव्य–विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

संस्कृत महाकाव्य–विधा का लेखन अति प्राचीन काल से चला आ रहा है। आधुनिक काल में महाकाव्य विधा लेखन को समकालीन भारतीय भाषाओं के साहित्य की अपेक्षा संस्कृत में बहुत अधिक प्रशंसा मिली। आधुनिक कवियों ने प्राचीन आचार्यों के लक्षणों को स्वीकारने में कुछ स्वतन्त्रता भी बरती है, वहीं कुछ ने तो उनकी उपेक्षा भी की है। इस प्रकार एक ओर परम्परागत रूढ़ लक्षणों के अनुसार महाकाव्य लिखे गए हैं तो दूसरी ओर परम्परा के आग्रह से मुक्त होकर महाकाव्य लिखे गए। आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों में लाभ के उद्देश्य से प्रशस्ति गान की प्राचीन मानसिकता शिथिल हुई है और कुछ उत्तम कोटि के सरल महाकाव्य लिखे गए जिनमें विविधता के साथ राष्ट्रीय चेतना को बहुत महत्त्व दिया गया है। 20 वीं शताब्दी से संस्कृत महाकाव्य का स्वर्ण युग माना गया है। आज हम 21 वीं शती में प्रवेश कर चुके हैं। आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों ने प्राचीन संस्कृत महाकाव्यों से पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की है किन्तु अपने नवोन्मेष प्रतिभा को अन्धानुगामी नहीं रखा है।

इन महाकाव्यों में परम्परा के प्रति श्रद्धा और आधुनिकता के प्रति आकर्षण दोनों का मिला–जुला रूप दिखाई देता है। महाकाव्य लेखन के क्षेत्र में **अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री, डॉ0 इच्छाराम द्विवेदी, डॉ0 रेवा प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 रामकरण शर्मा, डॉ0 हरिनारायण दीक्षित, डॉ0 गोस्वामी बलभद्र प्रसाद शास्त्री, डॉ0 मेधाव्रत शास्त्री, डॉ0 द्विवेन्द्रनाथ शास्त्री** आदि नाम प्रसिद्ध हैं। आधुनिक काल के कवियों ने अपनी परम्परा का अनुसरण तो किया है किन्तु इनके लेखन में सामाजिक चेतना व राष्ट्रीय चेतना के अनुकूल कथावस्तु को प्रस्तुत करने की विशेष प्रवृत्ति लक्षित होती है। जीवन का जितना सर्वांगीण चित्रण महाकाव्य उतार सकता है उतना कोई अन्य विधा नहीं। महाकाव्य साहित्य का वह समर्थ रूप है जिसमें व्यापकता, प्रबन्ध काव्य का सा सुसंगठित रूप, गीतों की सी मार्मिकता, नाटकों का सा गम्भीर्य तथा कहानी की सी कलात्मकता एक साथ मिल जाती है।

वर्तमान युग में समाज, धर्म और दर्शन की व्याख्या मनुष्य के लिए ग्राह्य होने के साथ–साथ भारतीयता के आत्म–गौरव की परिचायिका है। भारतीय समाज धर्म एवं दर्शन की विमुखता के कारण आस्था प्रश्न चिह्न के रूप में परिणत हो रही है परन्तु अन्तःकरण में विद्यमान मानव का दिव्यत्व उसे निःश्रेयस सिद्धि हेतु प्रेरित करता है। अतः आज के संक्रान्तिकाल में मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए सम्यक् दिशा निर्देशन के क्रम में यह महाकाव्य कितने प्रासंगिक हैं, इसे हम तभी सिद्ध कर सकते हैं, जब हम इनका सर्वांगीण अध्ययन करें। 21 वीं शती के संस्कृत कवि वर्तमान परिस्थितियों के प्रति कितना अधिक संवेदनशील है इसकी झलक हमें उनके काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है। वर्तमान 12–13 वर्षों में रचित संस्कृत महाकाव्यों का विविध आयामों की दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक है। इधर कुछ वर्षों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ पूर्व से अधिक परिवर्तित होती जा रही हैं। विश्व के साथ–साथ भारतीय समाज में भी विघटनकारी प्रवृत्तियाँ दृढ़ होती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में संस्कृत काव्यकार क्या समाधान प्रस्तुत करते हैं, इसी जिज्ञासा से मैंने इन महाकाव्यों को अपने अध्ययन का विषय बनाया है।

जिन महाकाव्यों को मैंने अध्ययन का विषय बनाया है उनका नामकरण भले ही परम्परागत रूप से निर्धारित किया गया हो किन्तु उनमें वर्णित विषय नवीन हैं जिनका ज्ञान हमें इनके अध्ययन से ही हो सकता है यथा– **'राधाचरितम्'** ऐसा काव्य हैं जिसमें राधा का चरित पौराणिक होते हुए भी आज की नारी के लिए एक आदर्श रूप है तथा जो वर्तमान नारी को कठिन व विपरीत स्थिति में जीने की नई राह दिखाने के साथ–साथ कर्ममय जीवन व्यतीत करने पर बल देता है।

'श्रीवग्वल्लदेवचरितम्', 'श्रीभक्तफूलसिंहचरित', 'पूर्वसावरकरचरितम्', 'श्रीदयानन्दचरितम्', 'रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम्', ऐसे महाकाव्य हैं जो किसी राष्ट्रीय चरित व प्रदेश विशेष से सम्बन्धित होने के साथ ही मानव–समाज के लिए आदर्श स्वरूप व जीवन को नई राह दिखाने वाले हैं। इसी प्रकार **'भार्गवीयम्', 'श्रीपरशुरामचरितमहाकाव्य', 'जानकीजीवनम्', 'साकेतसौरभम्'** ये सभी पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित होते हुए भी सर्वथा नवीन हैं। **'भारतमाताब्रूते'** महाकाव्य युगबोध से शतधा अनुप्राणित है। इसमें अधुनातन भारत में संक्रामक रोग की तरह तेजी से फैलती हुई अपसंस्कृति और असभ्यता के विभिन्न पक्षों को उजागर करके लोगों को उनसे दूर रहने का संदेश दिया गया है। इसमें समाज के प्रायः प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति की व्यथा की कथा को सुनकर उस परिस्थिति को मानवता के विपरीत सिद्ध किया है। भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता, देश–प्रेम, सर्वधर्म समभाव, सर्वक्षेत्र समभाव, सदाचार, अहिंसा, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे मानवीय गुणों को अपनाने के लिए इसमें प्रेरणा दी गयी है। **'धुक्षते हा धरित्रि'** महाकाव्य धरती की आह से उपजा एक ऐसा काव्य है जिसमें समानता, सह–अस्तित्व एवं मानवता का सहारा लेकर राजनीतिक उथल–पुथल को विकास देते हुए व्यक्ति चेतना से ऊपर राष्ट्र चेतना को बताया है। यह राष्ट्र चेतना का समुज्ज्वल रत्न है। इसमें युगीन सामाजिक संगति और विसंगति को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इसमें **'सर्व खल्विदं ब्रह्म'** का व्यावहारिक उपदेश एवं **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** को जीवन में उतारने का संदेश दिया है।

वस्तुतः इन सभी महाकाव्यों में समाज, धर्म, दर्शन, श्रेय–प्रेय, सत्यं–शिवं–सुन्दरम्, योग–भोग, प्रेम–सौन्दर्य आदि के सXम के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना का वर्णन भी पर्याप्त मात्रा में किया गया है। आज के सामाजिक जीवन की विसंगतियों, तनावों और अन्तर्द्वन्द्वों को अध्येय महाकाव्यों में सरल रूप से प्रस्तुत करते हुए एक दिशा देने का प्रयास किया है इनमें अनेक समसामयिक उलझे विषयों को और उनसे उत्पन्न समस्याओं को स्पर्श करते हुए उस चिरंतन शाश्वत सत्य को वर्णित करने का प्रयास किया है जो युग के प्रहारों से प्रतिहत हुई है।

अस्तु महाकाव्यों में वर्णित समसामयिक समाज के समग्र रूप को प्रकाश में लाने के लिए मैंने इन महाकाव्यों को अध्ययन का विषय बनाया। मेरे शोध का शीर्षक है– **इक्कीसवीं शती के संस्कृत महाकाव्य : समकालीन समाज, धर्म और दर्शन के परिप्रेक्ष्य में।** मेरी जानकारी में इस विषय पर अभी तक कोई शोधकार्य नहीं हुआ है।

शोध विषय के विस्तार के भय से अध्येय महाकाव्यों में 21 वीं शती के समस्त महाकाव्यों को लेना संभव नहीं है। अतः मैं मुख्य रूप से **श्री हरिनारायण दीक्षित** कृत **'भारतमाताब्रूते'** एवं **डॉ0 अशोक कुमार डबराल** कृत **'द्युक्षते हा धरित्री'** इन दो महाकाव्यों के विशेष परिप्रेक्ष्य में अध्ययन प्रस्तुत करूँगी पर अन्य महाकाव्य बिल्कुल अछूते नहीं रहेंगे।

इस शोध के माध्यम से मैं इन महाकाव्यों को प्रकाश में लाने का एक तुच्छ प्रयास करना चाहती हूँ। मुझे विश्वास है कि इस शोध कार्य में प्रवृत्त करने के लिए विद्वज्जन अपने बहुमूल्य सुझावों एवं सहयोग सहित सहर्ष अनुमति प्रदान कर मेरा मार्ग प्रशस्त करेंगे।

प्रस्तुत अध्ययन को मैंने छः अध्यायों में विभाजित किया है और उपसंहार के रूप में अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासङ्गिकता प्रस्तुत की जायेगी। अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची संलग्न है।

शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

प्रथम अध्याय : आधुनिक संस्कृत महाकाव्य : स्वरूप एवं परम्परा

1. आधुनिक संस्कृत महाकाव्य– लक्षण, स्वरूप एवं परम्परा।
2. आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों की प्रमुख विशेषताएँ
3. इक्कीसवीं शती के संस्कृत महाकाव्यों का सामान्य परिचय।

द्वितीय अध्याय : अध्येय महाकाव्यों का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन

1. अध्येय महाकाव्यों में वस्तु–विवेचन
2. पात्र–योजना एवं चरित्र–चित्रण

तृतीय अध्याय : भावपक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से अध्येय महाकाव्यों का अनुशीलन

1. भावाभिव्य×जना एवं रसनिरूपण
2. भाषा–सौष्ठव एवं रचना–शैली
3. अलंकार–विधान एवं छन्द–योजना

चतुर्थ अध्याय : अध्येय महाकाव्यों में वर्णित समकालीन समाज

पंचम अध्याय : अध्येय महाकाव्यों में धार्मिक चिन्तन

षष्ठ अध्याय : अध्येय महाकाव्यों में दार्शनिक चिन्तन

उपसंहार : अध्ययन का निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र. सं.	पुस्तक	लेखक / सम्पादक	प्रकाशन	सन् / संवत्
1	रामायण	डॉ0 चन्द्रमा पाण्डेयः	वाराणसेय संस्कृत संस्थान, जगतगंज, वाराणसी	2041
2	महाभारत	डॉ0 हरशरण कक्कड़	परिमल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली	2004
3	श्रीमद्भागवतपुराण	डॉ0 कृष्ण कुमार बाली	बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन	2011
4	पुराण–मीमांसा	आचार्य बलदेव उपाध्याय	चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी	1978
5	आधुनिक संस्कृत साहित्यानुशीलनम्	डॉ0 रामजी उपाध्याय	आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार, जयपुर	2003
6	अलंकार मीमांसा	डॉ0 सुनीता गुप्ता	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2000
7	अर्वाचीन संस्कृत महाकाव्य अनुशीलन	डॉ0 रस बिहारी द्विवेदी	सागरिका समिति, गौरनगरम् सागर (म.प्र.)	2004
8	अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय–चेतना	डॉ0 हरिनारायण दीक्षित	देववाणी परिषद्, नई दिल्ली	2001
9	काव्य प्रकाशः	आचार्य बाबूलाल शुक्ल	नाग प्रकाशन, नई दिल्ली	1995
10	छन्दोलंकारप्रकाश	डॉ0 कृष्ण कुमार साहित्याचार्य	साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार नई दिल्ली	1976
11	दशरूपक	आचार्य धनाय	चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी	1955
12	ध्वन्यालोक	आचार्य आनन्दवर्धन	संस्कृत सीरीज संस्थान, वाराणसी	1996
13	भारतीय काव्यशास्त्र मीमांसा	डॉ0 हरिनारायण दीक्षित	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली	1995

14	हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	डॉ0 लाल साहब सिंह	नमन प्रकाशन, नई दिल्ली	1998
15	साहित्य दर्पण	श्रीशालग्रामशास्त्री विद्यावाचस्पति	भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली	2008
16	संस्कृत काव्यशास्त्र और काव्य परम्परा	डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी	प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली	2004
17	संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य बलदेव उपाध्याय	शारदा मन्दिर, वाराणसी	1996
18	संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास	डॉ0 कृष्णकान्त चैतन्य	चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी	1997
19	संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास	आचार्य बलदेव उपाध्याय	चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी	सप्तम् खण्ड 1998
20	संस्कृत साहित्य का परिचय	डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली	1998
21	संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास	डॉ0 पुष्पा गुप्ता	नाग प्रकाशन, नई दिल्ली	1997
22	संस्कृत साहित्य 20 वीं शताब्दी	डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी	प्रतिभा प्रकाशन, शक्ति नगर, दिल्ली	1990

शब्दकोश–

1	पारिजात कोशः	डॉ0 ईश्वर चन्द्र शर्मा	परिमल पब्लिकेशन्स, नईदिल्ली	2004
2	शब्दकल्पद्रुम	स्यार–राजा–राधाकान्तदेव बहादुरेण	चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी	2024
3	संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ	पण्डित तरिणीश झा, स्वर्गीय द्वारका प्रसाद शर्मा रामनारायण लाल प्रकाश	इलाहाबाद पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद	1957
4	संस्कृत हिन्दी कोश	वामन शिवराम आप्टे	ओरियन्टल बुक सेन्टर नई दिल्ली	1977
5	संस्कृत वाङ्मय कोश	श्रीधर भास्कर वर्णेकर	भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता	1988

पत्र–पत्रिकाएँ–

1	अर्वाचीन संस्कृतम्	डॉ0 रमाकान्त शुक्ल	देववाणी परिषद्
2	अर्वाचीन संस्कृत माला	डॉ0 रमाकान्त शुक्ल	देववाणी परिषद्
3	विश्वसंस्कृतम्	प्रो0 इन्द्रदत्त उलियालः	विश्वश्वरानन्द–वैदिक शोध संस्थानम् (पंजाब)